मधुवन ओम् शान्ति अंक 245 दिसम्बर 2012

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई-बहिनों प्रति मधुर याद पत्र (22-11-12)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, पवित्रता की पर्सनैलिटी व रॉयल्टी वाले सच्चे वैष्णव, सफल तपस्वी निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद मधुबन बेहद घर से स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आप सबको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि हम सबकी अति स्नेही, दिलाराम बाप के दिल की दुलारी, बापदादा को स्वयं में समाने वाली, हम सबको प्रभु मिलन का अनुभव कराने वाली, पूरे ब्राह्मण परिवार के दिलों पर राज्य करने वाली मीठी दादी गुल्जार, आज स्वास्थ्य लाभ लेकर अहमदाबाद से अपने प्यारे मधुबन शान्तिवन में आराम से पहुंच गई। सभी भाई बहिनों ने बड़े उमंग-उत्साह से आज पुन: खुशियों भरी दीपावली खूब धूमधाम से मनाई, दादी का श्रृंगार किया, बधाईयां दी। शान्तिवन के कॉन्फ्रेन्स हाल में सभी ने दादी से नयन मुलाकात की। अब तो हम सबके प्राणों का प्यारा बाबा साकार रूप में मिलन मनाने 30 नवम्बर को बच्चों की महफिल में पधारेंगे ही। बेहद बाबा के बेहद घर की दीवाली के समाचार तो आप सबने सुने वा लाइव टी.वी. द्वारा देखें ही होंगे।

बाकी तो मधुबन घर में सदा ही बेहद की सेवायें चलती रहती हैं। कमाल है मीठे बाबा की और बाबा के अथक सेवाधारी बच्चों की, जो कितनी मेहनत से विश्व के कोने-कोने में अपनी सेवायें देते रहते हैं। इस बार ग्राम विकास प्रभाग की 18 वर्षों की सेवाओं की जैसे प्रत्यक्ष रिजल्ट दिखाई दी, शान्तिवन में ग्राम विकास आध्यात्मिक महासम्मेलन में करीब 6-7 हजार भाई-बहिनें बड़े उमंग-उत्साह से आये और बहुत अच्छी-अच्छी प्रेरणायें लेकर गये। साथ-साथ ज्ञान सरोवर में भी एशिया वा मिडल इस्ट के करीब 23 देशों के डबल विदेशी मेहमानों की बहुत अच्छी रिट्रीट चली, जिसमें भिन्न-भिन्न जाति, धर्म, भाषा के लोग बड़ी लगन के साथ आये और सच्चाई वा नि:स्वार्थ परमात्म प्यार का अनुभव करके गये। परमात्मा पिता ने हम बच्चों को ऐसी नॉलेज दी है जो अन्दर की अशान्ति को समाप्त कर, शान्त रहने के संस्कार इमर्ज कर देती है। जब साइलेन्स की शक्ति का अनुभव हो जाता है तो आवाज में आने की दिल नहीं होती। स्वत: स्वीट साइलेन्स का अनुभव होने लगता है फिर वही अनुभूति डेड साइलेन्स में ले जाती है तो वायुमण्डल में सन्नाटा हो जाता है। ऐसा ही अनुभव हर एक ने किया और बड़े अच्छे-अच्छे उद्‌गार व्यक्त किये।

हम सबको तो मीठे बाबा ने प्रेजन्ट में रहना सिखाया है। फ्युचर तो अच्छा है ही, पास्ट में तो जाना ही नहीं है। सदा हल्का रहने के लिए प्रेजन्ट में रहना है। पुरुषार्थ में जो बातें आवश्यक हैं, वह मिस न हों। करनकरावनहार बाबा है, हमने तो कुछ नहीं किया, पर बाबा करावनहार बनकर अपना कार्य आपेही करा लेता है, इसमें अहंकार की बात ही नहीं। सारी सेवायें बाबा ने कराई हैं, निमित्त भाव से अपार सुख पाया है। कई बाबा के बच्चे सेवाओं में निमित्त बनते-बनते सेवा के आधार से ज्ञान, योग, धारणा में आगे आये हैं। सेवा के सदके बाबा के अनन्य बच्चे बन गये हैं। कोई फिर ज्ञान, योग, धारणा से सेवा में आगे आये हैं, यह भी वन्डर है जो हमारा परिवर्तन देख दूसरों को परिवर्तन होने की प्रेरणा मिलती है। अब तो सम्पन्नता और सम्पूर्णता समीप दिखाई दे रही है, उसका हमें इन्तजार नहीं करना है। पुरुषार्थ की लगन ऐसी तीव्र हो, हर बात में रूहानियत हो तो सम्पूर्णता समीप आ ही जायेगी।

अभी तो प्यारे अव्यक्त बापदादा से मंगल मिलन मनाने की सीजन है, देश विदेश से बाबा के बच्चे मधुबन घर में आते वरदानों से अपनी झोली भरते रहेंगे।

अच्छा - सबको बहुत-बहुत याद.....

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

नॉलेजफुल के साथ पॉवरफुल बनो

1) नॉलेज सिर्फ सुनना नहीं लेकिन समाना है। जैसे भोजन सिर्फ खाने से शक्ति नहीं आती लेकिन हज़म करने से शक्ति आ जाती है। ऐसे नॉलेज सुनकर उस पर मनन चिंतन करने से वह शक्ति का रूप बन जाती है। तो ईश्वरीय नॉलेज को मनन चिंतन द्वारा हज़म कर लाइट माइट से सम्पन्न नॉलेजफुल और पॉवरफुल बनो।

2) नॉलेजफुल और पॉवरफुल का बैलेन्स अगर ठीक नहीं होगा तो मास्टर ब्लिसफुल कैसे बनेंगे! इसलिए नॉलेजफुल के साथ पॉवरफुल और लवफुल बनो। इन तीनों रूपों से एक साथ सर्विस करो। जब वाणी द्वारा सर्विस करते हो तो मन्सा पावरफुल हो फिर जो सम्पर्क में आये वह महसूस करे कि मैं अपनी गॉडली फैमिली में पहँच गया हूँ।

3) ज्ञान-मूर्त अर्थात् बुद्धि में सदैव ज्ञान का सुमिरण चलता रहे। वाणी से ज्ञान के ही बोल वर्णन करते रहो। हर कर्म द्वारा ज्ञान स्वरूप अर्थात् मास्टर नॉलेजफुल और मास्टर सर्वशक्तिमान्–इन मुख्य स्वरूपों का साक्षात्कार हो, इसको कहा जाता है 'ज्ञान-मूर्त'।

4) ज्ञान की सब्जेक्ट में प्रवीण आत्मा का टाइटल है मास्टर ज्ञान सागर वा नॉलेजफुल वा स्वदर्शन चक्रधारी और याद की यात्रा में जो यथार्थ युक्ति-युक्त, योग-युक्त है उनका टाइटल है–पॉवरफुल। अगर कोई कमजोरी को जानते हो, उसे मिटाने की प्वॉइन्ट्स भी वर्णन करते हो, लेकिन जो चाहते हो, वह कर नहीं पाते हो, चेकिंग के बाद भी चेंज नहीं कर सकते तो बैलेन्स ठीक नहीं है और ब्लिसफुल का टाइटल कट हो जाता है।

5) मास्टर नॉलेजफुल और मास्टर सर्वशक्तिवान् की स्टेज पर स्थित हो जाओ तो सब प्रकार की क्यू समाप्त हो आप एक-एक के आगे आपकी प्रजा और भक्तों की क्यू लग जाये लेकिन जब तक स्वयं ही इस क्यू में बिजी हो, तब तक वह क्यू कैसे लगे? इसलिए अब अपनी स्टेज पर स्थित हो, इन सब क्यू से निकल, बाप के साथ सदा मिलन मनाने की लगन में अपने समय को लगाओ और लवलीन बन जाओ तो दूसरी सब बातें समाप्त हो जायेंगी।

6) कोई भी बात का उलहना तब दिया जाता है, जब नॉलेजफुल नहीं हैं, यह क्यों हुआ.. ऐसा नहीं होना चाहिए था.. पीछे क्यों आये, साकार में क्यों नहीं मिले, यह सब उलहने हैं ना? अगर मास्टर नॉलेजफुल की स्टेज पर, त्रिकालदर्शी की स्थिति में स्थित हो जाओ तो कोई उलहना नहीं रहेगा। उलहना अर्थात् नॉलेज की कमी।

7) अभी सर्विस लेने का समय पूरा हुआ, अभी तो रिटर्न करने का समय है इसलिये अब स्वयं को पॉवरफुल, नॉलेजफुल बनाओ। अनेक प्रकार की क्यू से स्वयं को मुक्त करो। युक्ति जो मिलती है उसको काम में लगाओ। नॉलेजफुल तो बने हो, लेकिन समय के अनुरूप अब आवश्यकता है पॉवरफुल बनने की। नॉलेजफुल के तो जेवर तैयार किये हैं और अब पॉवरफुल के नग तैयार करके लगाने हैं।

8) नॉलेजफुल का अर्थ है हरेक कर्मेन्द्रियों में नॉलेज समा जाए। क्या करना है और क्या नहीं? फिर आँखें और वृत्ति धोखा नहीं खायेगी, जब आत्मा में नॉलेज आ जाती है तो सर्व इन्द्रियों में नॉलेज समा जाती है। तो हरेक कर्मेन्द्रिय को नॉलेजफुल बनाओ।

9) चेकिंग के साथ चेन्ज तब होंगे जब सर्वशक्तियाँ स्वयं में समाई होंगी अर्थात् नॉलेजफुल के साथ-साथ पॉवरफुल, दोनों का बैलेन्स होगा। नॉलेजफुल का रिजल्ट है–प्लैनिंग, पॉवरफुल की रिजल्ट है–प्रैक्टिकल। नॉलेजफुल का रिजल्ट है–संकल्प और पॉवरफुल का रिजल्ट है–स्वरूप में आना।

10) अब जबकि नॉलेजफुल हो, ऊंचे से ऊंची स्टेज पर पार्टधारी बन पार्ट बजा रहे हो, पॉवरफुल भी हो, ब्लिसफुल भी हो, सर्वशक्तिवान् के वर्से के अधिकारी भी हो तो स्वभाव-संस्कार को समय-प्रमाण व सेवा-प्रमाण किसी के कल्याण के प्रति व स्वयं की उन्नति के प्रति परिवर्तन करना अति सहज अनुभव हो–यह है आप विशेष आत्माओं का अन्तिम विशेष पुरुषार्थ।

11) कई बच्चे नॉलेजफुल तो हैं, सब कुछ जानते हैं लेकिन जानते हुए साक्षीपन की स्टेज पर नहीं रहते, अटेन्शन में अलबेलापन है, स्वचिंतन की बजाए, व्यर्थ बातों में, परचिंतन में समय गंवाते हैं। अगर हर आत्मा के प्रति शुभ चिन्तक होंगे तो परचिन्तन कभी नहीं करेंगे। शुभचिन्तन और शुभचिन्तक

में रहने से सदा साक्षी रहेंगे।

12) नॉलेजफुल आत्मा जानती है कि कोई भी विघ्न गिराने के लिए नहीं आते लेकिन और ही मज़बूत बनाने के लिए आते हैं, वह विघ्नों में कन्फॅयूज़ नहीं होगा। नॉलेजफुल कभी भी धोखा नहीं खायेगा क्योंकि माया कब आती और कैसे आती, इसकी नॉलेज होने कारण सदा सेफ रहते हैं।

13) नॉलेजफुल आत्मा को, आत्मा की भी नॉलेज के साथ शरीर के बीमारी की भी नॉलेज चाहिए। मेरा शरीर किस विधि से ठीक चल सकता है.. ऐसे नहीं आत्मा तो शक्तिशाली है, शरीर कैसा भी है। शरीर ठीक नहीं होगा तो योग भी नहीं लगेगा। फिर शरीर अपनी तरफ खींचता है इसलिए नॉलेजफुल में यह सब नॉलेज आ जाती है।

14) अगर कोई अपनी गलती से बार-बार बीमार होता है तो बापदादा उसको ज्ञानी योगी नहीं कहते। ज्ञान का अर्थ है समझ। अपनी स्थिति को भी समझो, अपने शरीर को भी समझो। आत्मा की स्थिति, शरीर की स्थिति, वायुमण्डल का सब ज्ञान बुद्धि में है तो कहेंगे नॉलेजफुल है।

15) नॉलेजफुल माना आत्मा, परम आत्मा और प्रकृति तीनों की फुल नॉलेज, अगर प्रकृति का भी नॉलेज नहीं है तो नॉलेजफुल नहीं है। स्थान, व्यक्ति, स्थिति तीनों का ज्ञान रखो। ज्ञान स्वरूप माना दूरांदेशी, त्रिकालदर्शी, तीनों का ज्ञान अगर स्पष्ट है तो सफलता मिलती है।

16) नॉलेजफुल का अर्थ है बाप को भी जानना, रचना को भी जानना और माया को भी जानना। अगर रचयिता और रचना को जान लिया और माया को नहीं जाना तो नॉलेजफुल नहीं ठहरे। नॉलेजफुल वा त्रिकालदर्शी आत्मा कभी किसी भी परिस्थिति में घबरा नहीं सकती, वह हर परिस्थिति में मुस्कराते रहेंगे। हर्षित होंगे, परिस्थिति से आकर्षित नहीं होंगे।

शिवबाबा याद है ? 11-09-11 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

"बुद्धि को एकाग्र करके एकरस स्थिति बनानी है तो मन को इच्छाओं से मुक्त करो"

(दादी जानकी)

अपने आपको देखने के लिये रोज़ की मुरली एक आइना देती है। तो मुरली के आइने में स्वयं को देखें, समझें और परिवर्तन हो जायें। बाबा स्पष्ट शब्दों में ऐसा समझाता है जो और सब बातें भूल जाएं क्योंकि और बातों को पकड़कर बैठ जाने से बाबा की बातों को समझने का टाइम ही नहीं मिलता है। सारे दिन का चार्ट अगर रात को देखेंगे, तो जहाँ बाप है वहाँ कोई बात नहीं है, जहाँ बात है वहाँ बाप नहीं है, यह बहुत अच्छा अनुभव है। जहाँ बातें हैं वहाँ बातें ही बातें होती हैं, अनेक बातों से छोटी बात भी बहुत बड़ी हो जाती है, फिर बाबा उससे छोटा हो जाता है क्योंकि बिन्दु है ना लेकिन यही बिन्दु बाबा ज्ञान का सागर है, शान्ति का सागर है, प्रेम का सागर है। ऐसे सागर बाबा के साथ बैठ जाओ तो बहुत मज़ा आता है। सागर के किनारे पर भी जाके बैठो तो बहुत अच्छा है, सागर की लहरें अच्छी लगती हैं। ऊपर ऊपर से पहले शीतलता मिलती है तो बैठे रहते हैं। ऐसे ही सागर के समीप रहने से शीतल रहते हैं और ऐसे सागर बाबा में डुबकी लगाओ तो शान्ति आयेगी, प्रेम आयेगा, ज्ञान अच्छा लगेगा, आनन्द का सागर है, पतित पावन है... ऐसी ऐसी बाबा की बातें अन्दर में मनन में, चिन्तन में हो, सागर की गहराई में जाने से हीरे, मोती भी मिलेंगे। सागर के किनारे कौड़ियां और शंख भी नेचुरली सागर की रचना से ही मिलते हैं।

ब्राह्मण माना एक बाप दूसरा न कोई का व्रत पक्का हो, तो वो सदा सुहागिन है। ऐसे सुहागिन से कभी आंसू नहीं बहेंगे, बहेंगे तो भूल है। कोई मरता है तो आंसू बहाते लेकिन हम आत्मा अविनाशी तो हमारा सम्बन्ध अविनाशी से तो क्या रोना, क्यों रोना...। तो जहाँ बाप वहाँ कोई बात नहीं, यह अनुभव करो तो सदा खुश रहेंगे। बाबा ने जो नियम बनाके दिये हैं उस पर आदि से अन्त तक चलते रहे, तो जिसके पास नियम का बल है, वो भाग्यवान हैं। भाग्यशाली वो कोई एक्टर का नाटक में जिसका आदि से अन्त तक पार्ट होता है। संगमयुग पर नियम, मर्यादा, सभ्यता तीनों बातों में एक्यूरेट रहें। अमृतवेले कोई सोता रहे तो सोया ही रहेगा इसलिए अमृतवेले उठने की

आदत डालो। पुण्य कर्म करने के लिये समर्पण हुए हैं तो वही करे ना, यहाँ कोई पाप कर्म कर नहीं सकते हैं।

जो राज़ी है वो सदा खुश है। थोड़ा भी नाराज़ होगा तो उसकी शक्ल कैसी होगी। जो नाराज़ होता है, सदा खुश नहीं रह सकता है। कुछ भी हो जाये राज़ी है, नहीं तो नाराज़ होने की नेचर बन जायेगी तो बड़ा नुकसान है। जैसा लक्ष्य रखेंगे वैसे लक्षण आयेंगे। लक्ष्य सामने है, लक्ष्य दाता साथ है, हमको सिर्फ उस लक्ष्य और लक्षण स्वरूप बनना है। ऐसे सिम्पुल बातों को छोड़ करके कॉम्प्लीकेटेड बातें बनाते तो बड़ा नुकसान है। जब अच्छी-अच्छी बातें बुद्धि में टपकती रहती हैं तो बहुत अच्छा लगता है। आपस में भी बाबा की मीठी-मीठी बातें करते हैं तो खेल खेलते हैं, आपस में दोस्त बन जाते हैं। बाबा की शिक्षायें ही हमारा श्रृंगार हैं। उन्हीं बाबा की शिक्षाओं को याद करते रहो तो वो स्वरूप बन जायेंगे। तो आदि-मध्य-अन्त आलराउण्डर पार्ट बजाने के अधिकारी होंगे। हीरो पार्टधारी जीरो के साथ रहने के हकदार बनेंगे। जो जीरो के साथ रहेंगे, वही हीरो बनेंगे।

बुद्धि को एकाग्र करके एकरस स्थिति बनानी है तो मन को इच्छाओं से मुक्त करो। अच्छे ते अच्छा बनने की इच्छा के अलावा और कोई इच्छा न हो। जैसा बाबा वैसा बच्चे, बाप और बच्चे में कोई अन्तर न हो। इसके लिये फॉलो करो। बस बाबा को देखो, बाबा जैसा बनो। सबको रिगार्ड देने का रिकॉर्ड खराब नहीं करना है। लेकिन हरेक का पार्ट अपना है इसलिये बाबा को ही सामने रखो तो बाबा जैसा बनेंगे। न बनने में न बनाने में एक बाप के अलावा और किसी को न देखो। बाबा को देखेंगे तो हमसे भी बाबा ही दिखाई देगा। शान्ति से काम ले लो तो हाय हाय न करना पड़े, पश्चाताप करना न पड़े। आपस में प्यार करते, बाबा कहते कहते, मेल करते माला में आ जायेंगे। अच्छा।

12-9-11

"कोई भी सेवा भावना से करो और जो करना है वो अब करो, कल किसने देखा" (दादी जानकी)

कोई भी सेवा भावना से करो और जो करना है वो अब करो, कल किसने देखा! (दादी जानकी)

मनन, चिंतन, मंथन, सिमरण में भी फर्क है। ज्ञान पहले मन में इतना अच्छा लग जाये, तब मनन चलेगा। मन के लिए कहा ही है मनमनाभव। चिंतन भव नहीं कहा है, चिंतन कभी व्यर्थ जा सकता है, देह अभिमान में आ सकता है। जब बात मन में लग गई उसका चिंतन चलता रहेगा। व्यर्थ चिंतन बन्द हो जायेगा, फिर गहराई में जायेंगे तो मंथन होगा। फिर धीरे-धीरे ज्ञान का सिमरण होता रहेगा, फिर बन जायेगी स्मृति।

भावना से सेवा कर रहे हैं तो खुशी होती है इससे शक्ति बढ़ती है। हमारे ऊपर बड़ों की भावना है या बड़ों ने उम्मीद रखी है कि बाबा का हर कार्य अच्छा हो तो अच्छा रहता है। हमारी लाइफ बाबा की श्रीमत प्रमाण होनी चाहिए। श्रीमत मुरली से मिलती है।

मैं सारी दुनिया को कहती हूँ कल किसने देखा, जो करना है अब कर लें। भले कितनी भी डिपार्टमेन्ट्स बनें, कितने भी प्रोग्राम बनें लेकिन 2012 में हम बाहर जा सकते हैं या नहीं जा सकते हैं, पता नहीं। जो करना है वह 2012 के जनवरी मास के पहले करो। सब जगह यह सीधा ही कह रही हूँ। अपने लिये भी कहती हूँ, टोटल भी कहती हूँ। लोगों को इतना पता होना चाहिए कि विनाश के पहले स्थापना का काम स्वयं भगवान धूमधाम से करा रहा है, तब तो हम प्लैटिनम जुबली मना रहे हैं। अगर कहेंगे कि हम सन् 2012, 13 में यह करेंगे, ऐसे करेंगे तो कोई नहीं सुनेगा इसलिये जो करना है अब करेंगे, उसका कई गुणा फायदा मिलेगा। अगर हम कहेंगे नेक्स्ट मंथ करेंगे, नेक्स्ट ईयर करेंगे तो क्या फायदा मिलेगा? भगवान के पास भी हिसाब ही हिसाब है। अभी भावना से करेंगे तो हो जायेगा।

कर्मयोग और सकाश पर गुल्जार दादी और जानकी दादी की रुहरिहान

सभी कर्मयोगी तो हो ही। कर्म करते भी जो बाबा कहता है सकाश दो और मुझे याद करो। दो काम बाबा कहता है कर्म करते मुझे याद करो और कर्म करते विश्व को भी सकाश दो क्योंकि विश्व बहुत दु:खी है, यह तो आप हम सभी जानते हैं। तो कर्मयोगी अवस्था में सन्तुष्ट हैं? हमेशा ही कर्म करते हुए बाबा की याद रहती है? क्योंकि उस कर्म की रिजल्ट क्या होगी? जब बाबा याद है और कर्म भी है तो कर्म में मुश्किल कोई नहीं आयेगी। जो हम चाहते हैं जैसे यह काम करना ही है और इसका रिजल्ट यह होना चाहिए, कर्म करने से पहले सबका लक्ष्य तो होता है ना। तो अगर हमारा कर्मयोग है तो जो हमारा लक्ष्य है, कर्म की रिजल्ट होनी चाहिए वो रिजल्ट हमको दिखाई देगी, अनुभव होगा। और कर्मयोग में कुछ अन्तर है, कभी है कभी नहीं है और कोई बीच-बीच में संकल्प आ गया या कहाँ दूसरे तरफ बुद्धि गयी तो वो सफलता नहीं हुई। तो कर्म करते हुए यह चेक करना है कि जो कर्म के पहले मैंने लक्ष्य रखा यह होना चाहिए, वही लक्ष्य और लक्षण हमारे समान रहे? यह अपनी चेकिंग आपेही करनी है। क्योंकि ज्यादा समय कर्मयोग में रहने से ही फाइनल रिजल्ट में मार्क्स मिलेंगे। भले हम ट्राफिक कन्ट्रोल करते हैं या क्लास भी करते हैं लेकिन वो थोड़ा टाइम होता है, ज्यादा टाइम कर्मयोग का ही होता है। तो कर्म और योग मेरा साथ-साथ है या बीच में ब्रेक आता है? समझो कोई बात आयी तो उस बात में भी कितना समय गया। सूक्ष्म चेंकिग करने से अपने समय को सफल कर सकेंगे।

तो एक तो कर्मयोगी जीवन मेरी सन्तुष्टता की है? बाबा तो देखता ही रहता है, हरेक की रिजल्ट तो बाबा के पास है ही। तो बाबा भी खुश हो वाह बच्चा वाह! और बाबा की खुशी से हमारी स्थिति में भी फर्क पड़ता है। स्थूल में भी देखो अगर कोई मेरे ऊपर खुश है तो हमारे पास सूक्ष्म में वो खुशी का वायब्रेशन पहुँचता है। मानो दो आपस में काम कर रहे हैं और आपस में एक दो से खुश हैं तो वह वायब्रेशन तो प्रैक्टिकल में एक दो से एक दो को आता है ना। ऐसे बाबा मेरे से खुश है वो भी वायब्रेशन हमारे पास पहुँच सकता है। इससे काम में हल्कापन होगा, काम में कोई विघ्न नहीं पड़ेगा और जो भी साथी होंगे वो सन्तुष्ट होंगे, यह रिजल्ट जो है वो हमको बताती है कि बाबा हमारे से खुश है क्योंकि प्रैक्टिकल है। तो साथियों की रिजल्ट समझो जो भी है 3 हैं, 4 हैं, 2 हैं, वह आपस में खुश हैं और सन्तुष्ट हैं और बाबा की याद जैसे कहते हैं वैसे है तो काम में रिजल्ट जो निकलेगी ना वो बहुत सहज और अच्छी होगी। बीच में सोचना नहीं पड़ेगा क्या करें यह हो गया, अभी क्या करें, नहीं करे... यह नहीं आयेगा। ऐसे लगेगा जैसे हुआ ही पड़ा था वो हमने रिपीट किया।

तो ऐसे कर्मयोग के ऊपर हमारा अटेन्शन हो। कोई भी कर्म करे चाहे मानो हल्का काम भी है लेकिन सन्तुष्टता फर्स्ट, जो साथी हैं, उसकी सन्तुष्टता और जो कर्म की रिजल्ट है, उसमें सब सन्तुष्ट होंगे तब कहेंगे हमने कर्मयोगी हो करके कर्म किया। अगर यह रिजल्ट नहीं है एक भी कम है मानो मैंने कहा ठीक है, साथी भी सन्तुष्ट हैं लेकिन उनकी रिजल्ट जनरल में अच्छी नहीं है तो माना कर्मयोग में कोई फर्क है। तो ऐसे अपने ऊपर कर्मयोगी जीवन का अटेन्शन रखना चाहिए क्योंकि ज्यादा कर्मयोगी आप होंगे। प्रैक्टिकल योग में बैठना करना, वो कम टाइम मिलता होगा लेकिन कर्म करते हुए योग में रहो यह चांस आपको ज्यादा होगा। तो आपका इस टॉपिक के ऊपर खास विशेष अटेन्शन होना चाहिए। अच्छा।

जानकी दादी:- दादी, सकाश और ब्लैसिंग में क्या फर्क है, यह स्पष्ट सुनाओ। जैसे कहने में आता है कि इसको बाबा की ब्लैसिंग है या बड़े मेरे से खुश हैं, बड़ों की इसमें खूब दुआयें हैं। और बाबा की श्रीमत अनुसार जो बाबा मेरे में भावना वा उम्मीद रखते हैं वो मैं पूरी करती हूँ, उसकी बाबा से ब्लैसिंग कर्मयोग से बाबा की शक्ति दिखाई देती है। सकाश क्या चीज़ है? सकाश मेरे को बाबा से पहले कैसे मिलती है

फिर मेरे थू ओंरो को कैसे मिलती है? यह स्पष्ट करो।

एक है बाबा का प्यार, हम बच्चे बाबा के बनें, बाबा ने लौकिक माँ बाप की तरह से भी ज्यादा प्यार दिया, सतयुगी माँ बाप से भी ज्यादा प्यार बाबा ने दिया। दूसरा जब हम बच्चे अच्छी तरह से पढ़ते हैं तो बाबा खुश होता है। वही माँ बाप है अगर पढ़ते अच्छा है तो खुश होता है। कोई पढ़ाई अच्छी नहीं पढ़ते हैं तो प्यार तो देगा पर इतना खुश नहीं होगा, पढ़ाई पर ध्यान नहीं देंगे तो। फिर इतने अच्छे कर्म करते हैं तो ब्लैसिंग देता है, उस लेवल से चलते हैं तो ब्लैसिंग मिलती है। इसमें दादी यह बताओ कि नम्बरवार कैसे सकाश कहाँ तक पहुँचती है?

गुल्जार दादी:- सकाश देना होता है और सकाश बाबा से लेना भी होता है। दोनों ही प्रकार से सकाश हम ले भी सकते हैं और दे भी सकते हैं। जैसे मन्सा सेवा के द्वारा बाबा कहते हैं सकाश दो, अपनी किरणों द्वारा उन आत्माओं को पहुँचाओ तो उन्हों को सकाश मिलेगी। जैसे बाबा हमको सकाश दे रहा है, कैसे दे रहा है? समझो, हम बाबा के सामने इमर्ज होते हैं और हमारे को बाबा याद करता है बच्ची बहुत अच्छी है, यह बहुत लाडली है,.... समझो बाबा वो दिल में हमारे को प्यार करके और सब मेरी जो विशेषतायें हैं वो कह कहके हमको सकाश देगा। यह बहुत सूक्ष्म है, उसको कैच करने के लिये बहुत अटेन्शन रखना होगा। ऐसे बाबा याद तो सभी बच्चों को करता है लेकिन जो अनन्य हैं, भले बाबा के कई बच्चे हैं, घर में रहने वाले भी है लेकिन मैं बाबा के नज़दीक की हूँ और बाबा मुझे याद करता है सकाश देने के लिये। तो मेरी बुद्धि फ्री होगी और कहाँ बिजी नहीं होगी, चाहे कर्म में, चाहे वाणी में कितना भी बिजी हों लेकिन मुझे बाबा की याद हो। मैं वाणी चला रही हूँ लेकिन बाबा की याद में चला रही हूँ तो बाबा से कनेक्शन है! कर्म कर रही हूँ बाबा याद है तो मेरा कनेक्शन है। तो अगर मेरा कनेक्शन होगा तो बाबा जो हमको सकाश दे रहा है, वो मेरे को पहुँचेगी। जैसे कोई बीमार है, वीक है तो उसे जब ताकत का इंजेक्शन देते हैं तो उसी समय महसूस करता है कि उस दवाई से मेरे में ताकत आयी। उठेगा, काम-काज करेगा तो अनुभव करेगा। ऐसे सूक्ष्म कनेक्शन बाबा से है, अगर बाबा ने मेरे को याद किया तो ऐसे लगेगा जैसे एक जीवन में कोई बहुत प्यारी गिफ्ट देता है तो वो बहुत अच्छा लगता है, मानो वो मेरे को गिफ्ट देता है तो उस समय मेरी खुशी क्या होगी! तो बाबा मेरे को प्यार कर रहा है, बाबा तो बाबा है ना उसने मेरे को याद किया है, तो आप सोचो उस समय हमारी स्थिति क्या होगी! बाबा याद आयेगा और बाबा ने मुझे खास याद किया है, मेरे को वह शक्ति मिल रही है और अनुभव हो रहा है तो क्या मेरी स्थिति होगी? सोचो। जैसे यहाँ हैं ही नहीं, बाबा के साथ उड़ रहे हैं। जैसे बाबा और मैं दोनों एक दिखाई दे रहे हैं, दो एक हो गये हैं। ऐसी सूक्ष्म स्थिति जो बाबा की प्रेरणा कैच करे और खुशी वा हल्केपन का अनुभव करे। साक्षी भी हो, साथी भी हो... यह अनुभव होगा।

दादी जानकी:- जो बहुतकाल से कर्मयोगी है या सेवा-धारी है, त्यागी है या तपस्वी है। बीच में ब्रेक न हुआ हो, जैसे गीता में भी है निरन्तर योगी साक्षात् मेरा स्वरूप बन जाता है। तो बहुतकाल का योग लगाने वाला योगी ऐसे सूक्ष्म प्यार, दुआयें सब बाबा की ली। श्रीमत भी पालन की, पर कभी अगर मैं थोड़ा मनमत पर चली तो सकाश नहीं ले सकेगी ना!

गुल्जार दादी:- बाबा दे रहा है लेकिन मेरी धरनी ठीक नहीं है, क्योंकि धरनी ठीक हो और उसमें बीज पड़े तो उसका फल निकलें। धरनी ही ठीक नहीं है तो फल कैसे निकलेगा।

दादी जानकी:- जैसे मैं आत्मा हूँ का ज्ञान मिला, मैं कौन-सी आत्मा हूँ? परमात्मा की सन्तान हूँ, कल्प पहले वाली हूँ, त्यागी तपस्वी आत्मा हूँ। मैं पुण्यात्मा पाप कर्म करते-करते मैं कैसी आत्मा हो गयी हूँ? बाबा का बनने से जो भूले की थी वो पूर्व का सब खत्म हो गया, इस जन्म का भी खलास हो गया, अब कोई हिसाब-किताब नहीं रहा है, मैं ऐसी आत्मा हूँ! अगर हूँ तो निकलेगा बाबा! बाबा! ऐसी दादी के साथ बैठने लायक बनाया, हम हाज़िर हो गये। तो बाबा भी हमारे सामने हाज़िर हो गया। आप सब भी सम्मुख हाज़िर हो गये। तो ऐसे बहुतकाल का अधिकार का अपना बाप के ऊपर समझना तब ही सकाश मिलेगी। सूर्य की डायरेक्ट सकाश मिलना कम बात है क्या! तो इतना बुद्धि क्लीन हो, कॉन्सेस क्लीयर हो। कर्म माना सेवा है, याद से जो सेवा है ना, सेवा ऐसी है जैसे मुझे लगता है भाग्य है। ड्रामा बड़ा, बाबा बड़ा या भाग्य बड़ा? बाबा है ही बड़ा। अच्छा - ओम् शान्ति।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

"जैसे बाबा और मुरली से प्यार है ऐसे धारणाओं पर ध्यान हो तो स्वत: सबको आकर्षण होगी"

बाबा ने जो हमें 4 सब्जेक्ट दी है - उन चारों का ही बैलेन्स चाहिए। लेकिन कभी-कभी सर्विस में तो बहुत आगे इन्ट्रेस्ट बढ़ जाता है। बाकी पीछे की तीनों सब्जैक्ट में अटेन्शन कम हो जाता है। लेकिन चारों सब्जेक्ट एक बैलेन्स में रहें यह है पढ़ाई का सार। कोई कहते - मेरा बाबा पर बहुत विश्वास है, लेकिन बाबा से विश्वास माना आज्ञाओं पर विश्वास। बाबा की पहली-पहली आज्ञा है कि इस पुरानी दुनिया को देखते हुए भी नहीं देखो। इस देह में रहते भी देह से ममत्व नहीं रखो। किसी भी व्यक्ति, वैभव से अटैचमेन्ट न रहे। तो अपने आपसे पूछो किसी भी बात में रिंचक मात्र भी बुद्धि का अटैचमेन्ट है? अगर स्वयं की स्वयं से भी अटैचमेन्ट है तो भी रांग है। दूसरे से है तो भी रांग है। अगर कोई कहे हम सर्विस के बिगर रह नहीं सकते, बेचैन हो जाते हैं तो यह भी अटैचमेन्ट हो गई। यह भी नहीं चाहिए। क्योंकि बाबा हमें बहुत-बहुत दूर चैन की दुनिया में ले जा रहा है। किसी भी प्रकार की वहाँ बेचैनी न हो। अगर कभी यह बेचैनी का शब्द भी आता है तो समझना चाहिए आज स्थिति नीचे ऊपर है। हम सबको चैन देने वाले हैं, चैन देने वाले अगर बेचैन हो जाएं तो समझो गड़बड़ है। बाबा की आज्ञा है - हर बात में डिटैच रहो। सब कुछ करो लेकिन करते हुए भी डिटैच रहो। बुद्धि के अभिमान का त्याग सेवा का त्याग, साथियों का त्याग, अन्दर से हुआ पड़ा हो।

हम सभी की पहली धारणा है - पावन बनना। काम महाशत्रु पर विजय प्राप्त करना। बाबा के सिवाए कोई यह दावा नहीं करता कि मैं आया हूँ तुम बच्चों को पावन बनाने। अगर इसी सब्जेक्ट में आप नम्बरवन विजयी हो तो आप सबसे महान हो। इसके लिए दृष्टि, वृत्ति, वायब्रेशन, व्यवहार सबमें बिल्कुल पावन बनो। ऐसे पावन रहो जो दूसरों को भी पावन बनने की प्रेरणा मिल जाए। इसी में ही माया आती। इसी माया को जीतना ही मायाजीत बनना है। कई बार हम आप सबका दिल से यह गुण गाती की आपने एक बाबा से वायदा रखा है कि मेरा तो एक बाबा दूसरा न कोई। दिल में बाबा को बसाया है। परन्तु जब कोई कहाँ थोड़ा भी किसी की अटैचमेन्ट में आते तो 5 मंजिल से नीचे गिर पड़ते। इसलिए नीति से प्रीति रखो। नियम संयम को जीवन का श्रृंगार समझो। मर्यादायें हमारे संगमयुग का ताज हैं। जितना उसमें रहो उतना सेफ रहेंगे। नहीं तो बुद्धि आज नहीं जायेगी, 4 मास नहीं जायेगी लेकिन 5वें मास जरूर जायेगी। बाबा ने कभी एक साथ टेबुल पर बैठकर भाईयों को खाने की छुट्टी नहीं दी टेबल पर हंसी मजाक करने की छुट्टी नहीं दी। यह सब छोटी-छोटी बातें भी ध्यान पर रखना बहुत जरूरी हैं। भल हम आत्मा भाई-भाई हैं, नालेज है हम बिन्दु हैं लेकिन नालेज के साथ मर्यादायें भी रखना जरूरी है।

2) अपनी स्व-स्थिति की उन्नति का आधार है ड्रामा। ड्रामा कहा माना फुल स्टॉप आया। एक सेकण्ड बीता फुल स्टॉप। यह ऐसी नॉलेज है जो अपने को सदा निश्चिन्त रख सकते हैं। ड्रामा की नॉलेज ही हमें निर्मोही बनाती है। हर एक का अपना-अपना पार्ट है, इसलिए किसी के पार्ट से फीलिंग नहीं आती। हरेक की अपनी विशेषता है, अपनी खूबी है। वह गुण देखो, विशेषता देखो तो संस्कार नहीं टकरायेंगे। जो कई बार थोड़ा संस्कारों का टक्कर होता, बुद्धि डिस्टर्ब होती – ड्रामा का फुलस्टाप लगाकर अपनी बुद्धि को डिस्टर्ब होने मत दो। ड्रामा कहा – बिन्दु लगा। बिन्दी स्थिति कभी अपनी स्थिति को ऊपर नीचे नहीं करेगी, अचल अडोल रखेगी। अपनी स्थिति अडोल हो, व्यवहार कुशल हो। आपस में बहुत स्वीट व्यवहार रखो लेकिन किसी की स्वीटनेस से प्रभावित न हो जाओ। यहाँ पर चाहिए सेफ्टी। यह बड़ा स्वीट है नहीं। ऐसे नहीं यह स्वीट है तो आप मक्खी बन जाओ। मधु भले बनो पर मक्खी नहीं बनो। अपने को भी स्वीट बनाओ। बाबा ने कोई हठयोग नहीं दिया है कि आपस में नहीं हंसो, हंसो बहलो, खुशी में नाचो परन्तु पर्सनल किसी के साथ हंसना बहलना यह रांग है। मुझे पर्सनल सर्विस चाहिए सेन्टर चाहिए, साथी चाहिए... यह रांग है। परिवार से इन्डीपेन्डेन्ट नहीं रहो। हम सब एक दूसरे पर डिपेन्ड है। कोई-कोई कहते हैं हम तो मॉर्डन है। हम मॉर्डन रहना चाहते हैं लेकिन बी.के. माना बैकुण्ठ के वासी। वह मार्डन नहीं रह सकते। मार्डन तो रावण के हैं। बाबा ने हमें सफेद ड्रेस पहनना सिखा दिया, प्यूरिटी सिखा दिया। प्यूरिटी में रहना ही हमारे लिए मार्डन रहना है। बाबा ने पुरानी दुनिया के मार्डन से निकाल दिया। हम तो स्वर्ग के मार्डन, उसके मॉडल बन रहे हैं। किसी भी प्रकार का शौक है – चाहे पार्टियों में

जाने का, चाहे दूर-दूर जाकर पिकनिक आदि करने का... यह सब शौक योग की स्थिति से नीचे ले आयेंगे। यह योग की स्थिति में बाधक हैं। जितनी मर्यादा रखो उतना अच्छा है। आज माया नहीं है, कल किसी भी घड़ी माया आ सकती है। इसलिए एक दूसरे से प्राइवेट पत्र व्यवहार न रखो। प्राइवेट लेनदेन न करो। यह सब धारणायें बनाओ। नियम संयम ही जीवन का आदर्श हैं। जितना प्यारे बनो उतना न्यारे बनो। जितना नियमों का पालन करेंगे उतना स्वधर्म की स्थिति में अच्छे रहेंगे।

3) एक बात की सबसे रिक्वेस्ट करती हूँ - ईश्वरीय मर्यादायें हम सबका धर्म है, इन्हें कभी भी लूज नहीं करो। माया को कहीं से भी घुसने न दो। हम मनमौजी नहीं है, बाबा के मौजी हैं इसलिए मन की मौजों को त्याग दो। इसका करो त्याग और बाबा के अतीन्द्रिय सुख के झूलों में झूलो। कोई भी बात की राय लेना हो तो भले लो, सैलवेशन चाहिए भले पूछो - लेकिन आपस में पार्टी नहीं बनाओ। यदि किसी की एक्टिविटी अच्छी नहीं लगती है तो मीठे रूप से रुहरिहान करके एक दो के ध्यान पर दो, राय दो लेकिन मास्टर बनकर, शिक्षक बनकर नहीं करो। उसका वातावरण, वायुमण्डल नहीं बनाओ। एक दो की कमियों का वर्णन न करके गुणों का वर्णन करो।

4) हमारा ईश्वरीय परिवार एक है, हमारे ईश्वरीय परिवार का झण्डा दुनिया में कायम होना है। इस एकता के झण्डे को कोई तोड़ नहीं सकता। हमारी एकता का झण्डा विश्व को एक बनायेगा। सदा आपस में एक होकर रहो। सर्विस भले कम हो लेकिन एकता को नहीं तोड़ो। एक मत, एक परिवार, एक बाबा, एक पढ़ाई, एक नई दुनिया बनानी है तो सब एक हो। सर्विस भी एकता से चले। दोनों हाथ मिलाकर चलो। चाहे कोई बड़ा हो, चाहे कोई छोटा हो, सब एक हैं। जैसे बाबा को प्रत्यक्ष करने के लिए हरेक जी जान लगा रहे हो - ऐसे ज्ञान-योग-धारणा सबमें महान रहो तो महानता से सहज प्रत्यक्षता हो जायेगी। अच्छा– (दादी जी ने वड़े की कहानी सुनाई) जो वड़ा खाते हैं – उससे किसी ने पूछा – ऐ वड़ा तू वड़ा कैसे बना? तो बडे ने उत्तर दिया – पहले मैं खेती में पैदा हुआ, फिर मुझे चक्की में पीसा, फिर पानी में डाला, फिर पीसा, फिर गर्म कढ़ाई में डाला, फिर ठण्डे पानी में डाला, फिर पानी से निकाल दही में डाला तो मैं फूल गया। तो वड़ा बनना है तो कढ़ाई में जलना सीखना होगा। जब तक स्वयं जलता नहीं तब तक वो वड़ा नहीं होता। बड़ा बनना है तो कोई पीसेगा, कोई जलायेगा, कोई शीतल ठण्डा पानी भी देगा। कोई खाकर प्यार भी देगा - तब बड़ा बनेंगे इसलिए यह कभी नहीं कहो कब तक सहन करेंगे। सहन करो तो बड़ा बनो। अच्छा –ओम् शान्ति।

ग्राम विकास प्रभाग के सदस्यों प्रति विशेष खुशखबरी

आप सबकी अथक मेहनत से शान्तिवन में ''अखिल भारतीय ग्राम विकास आध्यात्मिक महा सम्मेलन'' 17 नवम्बर से 21 नवम्बर, 2012 तक खूब सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। अनेक ग्रामीण कार्यकर्ता, ग्रामीण बैंक के मेनेजर्स, कृषि वैज्ञानिक, सरपंच, उप-सरपंच आदि के साथ-साथ अनेकानेक किसान भाई-बहनों ने भी इस सम्मेलन का लाभ लिया। दादी जानकी जी, दादी रतन मोहिनी जी ने सभी को बहुत अच्छी पालना दी। अनेक अनुभवी भाई-बहनों ने करीब 6,000 से भी अधिक लोगों की विशाल सभा को सम्बोधित किया। भिन्न-भिन्न विषयों पर वर्कशॉप भी रखी गई, फल स्वरूप सभी ने राजयोग की विधि सीख कर शाश्वत यौगिक खेती की प्रेरणा ली।

आज ग्राम विकास प्रभाग के सभी सदस्यों को खुशखबरी भरा निमन्त्रण भेज रहे है कि 22 मार्च, 2013 के बापदादा के मिलन के टर्न में आप सबके लिए विशेष 2 दिन की ट्रेनिंग व मीटिंग का कार्यक्रम रखा गया है। सभी को 19 मार्च शाम तक पहुँचना है, 19 शाम से 21 मार्च शाम तक मीटिंग रहेगी। 22 मार्च को योग भट्ठी तथा अव्यक्त मिलन मनायेंगे। 23 मार्च को वापस जा सकते है।

अत: इसी प्रमाण आप अपने आने-जाने की रिजर्वेशन करवा लें तथा आवास-निवास विभाग में सूचना अवश्य दें।

– – सहयोग के लिए धन्यवाद।